व्हाइट नॉइज़

डॉन दलीलॉ

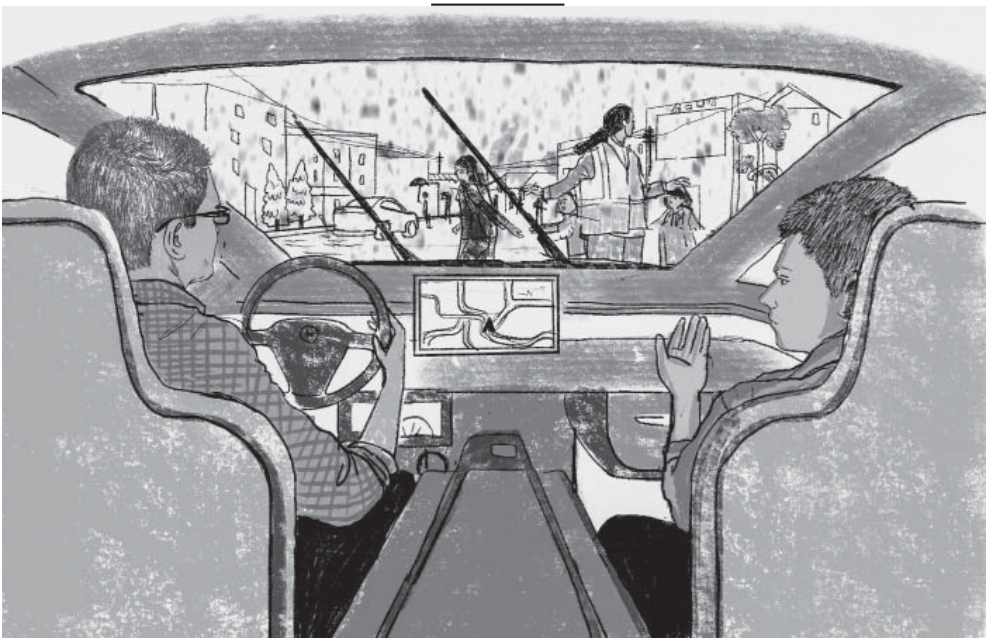

"आज रात बारिश होगी।"

"बारिश हो रही है," मैंने कहा।

"रेडियो में कहा था कि रात को बारिश होगी।"

बुखार और गले की खराबी से उभरने के बाद यह उसका पहला दिन था और मैं गाड़ी में उसे स्कूल ले जा रहा था। पीला स्टिकर लगाए एक औरत ट्रैफिक रोककर बच्चों को सड़क पार करवा रही थी।

"सामने का शीशा देखो," मैंने कहा। "बारिश है कि नहीं?"

"मैं तो बस आपको बता रहा हूँ कि घोषणा क्या हुई थी।"

"रेडियो में कुछ कहा गया तो इसका मतलब यह नहीं कि हम प्रत्यक्ष ऐन्द्रिक सबूतों में यकीन करना छोड़ दें।"

"ऐन्द्रिक सबूत? हमारी इन्द्रियाँ बारहा हमें सही की जगह गलत नतीजे पर ले जाती हैं। यह बात प्रयोगशाला में सिद्ध हो चुकी है। आप वो थियोरम्स (प्रमेय) नहीं जानते जिनमें कहा गया है कि कुछ भी ऐसा नहीं होता जैसा कि

वह दिखता है? हमारे ज़हन से अलग भूत, वर्तमान या भविष्य, कुछ भी नहीं होता है। गति के नियम दरअसल बड़ा छलावा हैं। आवाज़ से भी ज़हन धोखा खा जाता है। कोई आवाज़ न सुनाई पड़े तो इसका मतलब यह नहीं कि कुछ वजूद में नहीं है। कुत्तों को सुनाई पड़ जाता है। दूसरे जानवरों को भी और मुझे पक्का यकीन है कि ऐसी आवाज़ें भी हैं जो कुत्ते भी नहीं सुन पाते होंगे। पर वो लहरें बन हवा में मौजूद हैं। शायद वे कभी नहीं रुकतीं। और-और महीन-से-महीन होती जाती हैं। कहीं से आती हुईं।"

"बारिश हो रही है," मैंने पूछा, "या नहीं?"

"मैं नहीं चाहता कि इसका जवाब देना ही पड़े।"

"कोई तुम्हारे माथे पर बन्दूक ताने खड़ा हो तो?"

"कौन, आप?"

"कोई भी। बरसाती ट्रेंच-कोट और धुँधले चश्मे पहना कोई आदमी। तुम्हारे माथे पर बन्दूक तानकर पूछे, 'बारिश हो रही है या नहीं? बस, सच कह दो और मैं अपनी बन्दूक हटा लूँगा और अगली उड़ान से यहाँ से चला जाऊँगा'।"

"उसे कैसा सच जानना है? क्या उसे किसी और तारामण्डल में तकरीबन रोशनी की रफ्तार से सफर कर रहे किसी का सच जानना है? क्या वह किसी न्यूट्रॉन तारे का चक्कर काटते किसी का सच जानना चाहता है? ऐसे लोग हमें खुर्दबीन से देख पाते तो हम उन्हें दो फीट दो इंच लम्बे-से दिखते और हो सकता है कि आज की जगह पिछले कल बारिश हो रही होती।"

"उसने तुम्हारे माथे पर बन्दूक तानी हुई है। वह तुम्हारा सच जानना चाहता है।"

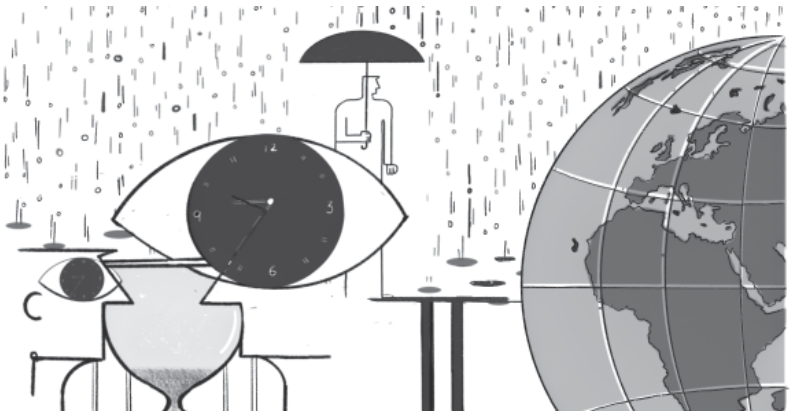

"मेरे सच की क्या कीमत? मेरा सच बेमानी है। क्या पता, वह बन्दा किसी और ही सौरमण्डल के किसी दीगर ग्रह से आया हो। क्या पता कि जिसे हम बरखा कहते हैं, वो साबुन कहता हो। जिसे हम सेब कहते हैं, वो बरखा कहता हो। तो मैं उसे क्या कहूँ?"

"चलो, उसका नाम फ्रैंक जे. स्मॉली है और वह सेण्ट लुइस शहर का रहने वाला है।"

"वह यह जानना चाहता है कि *अभी*, इसी पल बारिश हो रही या नहीं?"

"अभी और यहाँ बिलकुल।"

"अभी भी कुछ होता है क्या? हमारे कहते ही 'अभी' आकर गुज़र चुका होता है। मैं कैसे कह सकता हूँ कि अभी बारिश हो रही है, जब कि आपका तथाकथित 'अभी' मेरे कहते ही 'तब' हो चुका है?"

"तुम्हीं ने कहा था कि भूत, वर्तमान या भविष्य कुछ भी नहीं होता है।"

"वह बस क्रियाओं में ही है। वहीं ये हमें दिखते हैं।"

"बारिश संज्ञा है। यहाँ, ठीक इस जगह पर, अगले दो मिनटों में जब भी तुम सवाल का जवाब देना चाहो, बारिश हो रही है या नहीं?"

"ज़ाहिरा तौर पर चल रही गाड़ी में बैठकर ठीक इस जगह की बात कर रहे हैं तो मेरे खयाल से यही इस बातचीत की समस्या है।"

"हाइनरिख, मुझे बस जवाब दे दो, ओके?"

"ज़्यादा-से-ज़्यादा मैं बस अन्दाज़ा लगा सकता हूँ।"

मैंने कहा, "या तो बारिश हो रही है, या नहीं।"

"बिलकुल सही, मैं यही बात कहना चाह रहा हूँ। आप अन्दाज़ा भर लगा सकते हैं। एक ओर छः, दूसरी ओर आधा दर्जन लगाया।"

"पर भई, बारिश हो रही है।"

"आप आसमान में सूरज को घूमता देखते हैं। पर असल में आसमान में सूरज घूम रहा है या धरती घूम रही है?"

"मुझे यह तुलना पसन्द नहीं है।"

"आपको पक्का यकीन है कि बारिश ही हो रही है? आपको कैसे पता कि ये नदी के उस पार की फैक्ट्रियों (कारखाना) से आती सल्फ्यूरिक अम्ल की बूँदें नहीं हैं? आप कैसे जानते हैं कि यह चीन में छिड़े किसी जंग के नतीजतन मौसम की गड़बड़ नहीं है? आपको तो अभी और यहीं जवाब चाहिए। क्या आप अभी और यहीं यह सिद्ध कर सकते हैं कि ये बारिश की बूँदें ही हैं? मैं कैसे जानूँ कि जिसे आप बरखा कहते हैं, वह वाकई बरखा ही है? बारिश आखिर है क्या?"

"बारिश वह है जो आसमान से गिरती है और जिससे कि हम जिसे भीगना कहते हैं, हो जाते हैं।"

"मैं तो भीगा नहीं हूँ। आप भीगे हैं क्या?"

"वाह, वाह," मैंने कहा। "बहुत बढ़िया।"

"नहीं, नहीं, मैं संजीदगी से पूछ रहा हूँ। आप भीगे हैं क्या?"

"फर्स्ट-क्लास," मैंने उसे कहा। "अनिश्चितता, संजोग और विशृंखलता की जीत हुई। विज्ञान का सुनहरा दौर।"

"आप व्यंग्य करते रहें।"

"कुतर्की और बाल की खाल निकालने वाले लोगों की बेइन्तहा खुशी।"

"ठीक है, आप तंज कसते रहें। मुझे क्या।"

डॉन दलीलॉ: अमरीकी उपन्यासकार, लघु कथाकार, नाटककार, पटकथा लेखक और निबन्धकार हैं। उनके कार्यों में टेलीविज़न, परमाणु युद्ध, भाषा की जटिलताएँ, कला, डिजिटल युग का आगमन, गणित, राजनीति, अर्थशास्त्र और खेल जैसे विविध विषय शामिल हैं। सन् 1985 में देलाइलो को उनके उपन्यास *व्हाइट नॉइज़* के प्रकाशन ने व्यापक पहचान दिलाई और उन्हें उस कथा साहित्य के लिए 'राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: हरजिन्दर सिंह 'लाल्टू': सेंटर फॉर कम्प्यूटेशनल नेचुरल साइंस एंड बायोइन्फॉर्मेटिक्स, आई.आई.आई.टी., हैदराबाद में प्रोफेसर। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, न्यू यॉर्क, यूएसए से पीएच.डी.। सन् 1987-88 में *एकलव्य* के साथ युजीसी द्वारा स्पेशल टीचर फैलोशिप पर हरदा में रहे। आप हिन्दी में कविता-कहानियाँ भी लिखते हैं।

यह जॉन देलाइलो के उपन्यास *व्हाइट नॉइज़* के छठे अध्याय में से एक हिस्सा (हाइनरिख और उसके पिता के बीच बहस) है।

सभी चित्र: प्रभाकर डबराल: पेशे से एक चित्रकार, प्रकृति प्रेमी, कहानीकार और डिज़ाइन शिक्षक हैं। लोगों की उत्पत्ति की कहानियाँ सुनना बहुत पसन्द करते हैं। *एकलव्य* की बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक* के लिए स्वतन्त्र चित्रकारी करते हैं। समानुभूति, करुणा और आत्म-साक्षात्कार फैलाने में सहायक बनकर अपने जीवन को जीने लायक बनाना चाहते हैं।